E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

अग्नि देवता का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

वैदिक देवताओं में याज्ञिक महत्ता की दृष्टि से अग्नि का ही प्रथम स्थान है। ऋग्वेद के लगभग दो सौ सूक्तों में सम्पूर्ण रूप से तथा अन्य सूक्तों में कुछ देवताओं के साथ आंशिक रूप से अग्नि की स्तुति की गई है। इन्द्र यदि आर्यों के राष्ट्रीय देवता हैं तो अग्नि उनके गृह देवता हैं। यद्यपि अग्नि का बहुधा अन्य देवताओं के साथ कथन किया गया है, लेकिन इन्द्र के साथ इनका घनिष्ठ सम्बन्ध है। ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में इन्द्र और अग्नि को सम्मिलित रूप से सम्बोधित किया गया है। अग्नि अपने उपासकों के महान् उपकारक हैं। वे उपासकों को स्वास्थ्य, समृद्धि, पुत्र तथा सभी प्रकार के सुख प्रदान करते हैं। वे पुण्यात्माओं के रक्षक तथा पापियों के विनाशक हैं। अग्नि का प्रकाश सूर्य, उषा तथा विद्युत् की किरणों के समान है। श्री अरविन्द ने अग्नि को मनुष्य की दिव्य सङ्कल्प शक्ति और विवेक का प्रतीक माना है। अग्नि के सम्बन्ध में कतिपय मुख्य तथ्य इस प्रकार हैं-

(१) ऋग्वेद में स्थान- ऋक्संहिता का प्रथम मन्त्र अग्नि देवता को ही सम्बोधित किया गया है तथा प्रथम पद भी 'अग्निम्' ही है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि ऋग्वैदिक देवताओं में अग्नि प्रधान देवता हैं। अग्नि का अर्थ है- वह देव जो यज्ञ में प्रदान की गयी हवि को देवताओं तक पहुँचाता है। ऋग्वेद के तीन प्रमुख देवताओं में अग्नि का द्वितीय स्थान है। प्रायः ऋग्वेद के सभी मण्डलों में प्रारम्भिक सूक्त अग्नि को ही सम्बोधित किये गये हैं।

(२) उत्पत्ति– अप्, उषस्, त्वष्टा, द्यावापृथिवी और विष्णु को अग्नि का उद्भावक कहा गया है, वह दो अरणियों के संघर्ष से उत्पन्न होता है। अरणियों में ऊपर वाली अरणि को पति और नीचे वाली अरणि को पत्नी कहा गया है, जिनके संयोग से शिशुवत् अग्नि की उत्पत्ति होती है। अग्नि को दस युवतियों से भी उत्पन्न कहा गया है। ये दस युवतियाँ मनुष्य के हाथों की दसों अङ्गुलियाँ ही हैं। अग्नि को 'सहसः पुत्र' भी कहा गया है क्योंकि अग्नि को उत्पन्न करने के लिए सहस् (शक्ति) भी लगानी पड़ती है।

(३) स्वरूप- अग्नि का धर्म है प्रकाशित होना। वह अङ्गारमय है, प्रकाशमय है (अङ्गिरा, राजन्तम्) ऋग्वेद में अग्नि को घृत-पृष्ठ, घृत-प्रतीक, घृत-लोम, मद्रजिह्व, शोचिषकोश आदि भी कहा गया वे भास्वर ज्वलाओं वाले हैं। उनका वर्ण भास्वर है। वे हिरण्यरूप हैं। वे सूर्य की भाँति चमकते हैं। उनकी प्रभा उषा, सूर्य एवं विद्युत जैसी है।

(४) कार्य– अग्नि यज्ञ में देवताओं को बुलाता है। वह उत्तम धनादिकों का प्रदाता है। अग्नि के माध्यम से यजमान को पुष्टि यश और वीर पौत्रादि की प्राप्ति होती है। यह यज्ञों का रक्षक और सत्य का प्रकाशक है। कर्मफल को प्रदान करना भी अग्नि का ही कर्म है। अग्नि स्वयं प्रकाशवान होने से रात्रि को प्रकाशित करता है। जिस प्रकार एक पिता अपने पुत्र के लिए कल्याण-भावना रखता है उसी प्रकार अग्नि भी कल्याणकारी। अग्नि यज्ञ के प्रत्येक रहस्य को जानता है, इसीलिए जातवेदस भी कहा गया है। जिस प्रकार ऋतु और युद्धकर्म इन्द्र के अधीन है उसी प्रकार आर्यों के सारे गृहकृत्य अग्नि के अधीन हैं। अग्नि के सम्बन्ध में यह भी कहा गया है कि जिस यज्ञकर्म का साक्षी अग्नि होता है, केवल उसका ही फल देवताओं के पास पहुँचता है।

(५) प्राकृतिक आधार– अग्नि का प्राकृतिक आधार स्पष्ट है। हमारे सम्मुख अग्नि के मुख्यतः तीन रूप दृष्टिगोचर होते हैं- काठों से उत्पन्न दावाग्नि, जलों से उत्पन्न वाडवाग्नि एवं द्युलोक से उत्पन्न वैद्युताग्नि। ये अग्नि के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुके हैं। यद्यपि जलों के सङ्घर्षण से अग्नि की उत्पत्ति नहीं होती तथापि वडवाग्नि को ही सम्भवतः अप् से प्रादुर्भूत अग्नि माना गया है। आधुनिक युग में विद्युत शक्ति की उत्पत्ति भी जलों के द्वारा की जाती है। बादलों के पारस्परिक टकराव से उत्पन्न आकाशीय विद्युत भी तो जलों से ही उत्पन्न मानी जा सकती है क्योंकि बादल भी जलों के ही रूप हैं। इस प्रकार यह सिद्ध है कि वैदिक अग्नि देवता का प्राकृतिक आधार भी अग्नि के उपर्युक्त रूप ही है।

(६) मानव जीवन से सम्बन्ध- अग्नि का मानव जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। सम्पूर्ण गृहकृत्य के लिए अग्नि की महती आवश्यकता है। प्रत्येक घर में उसका निवास है। अग्नि ही एक ऐसा देवता है जो मनुष्य के जन्म से मृत्युपर्यन्त उसका साथ देता है। अग्नि के माध्यम से ही इस संसार में प्रकाश का जन्म हुआ है। वैदिक युग में ऋषियों के समक्ष अग्नि की उपादेयता सर्वाधिक सिद्ध हुई। इसका मुख्य

कारण यह है कि अग्नि की सहायता से ही यज्ञानुष्ठान, भोजन-पाक तथा शीत इत्यादि से रक्षा हो जाती है। इसलिए वैदिक ऋषि अग्निदेव से अपने उन्नति एवं कल्याण की प्रार्थना करता है।